स्वर्ग से सहने की शक्ति

जैसे जैसे हम इस हफ्ते के विषय पर सोच विचार करते हैं, क्रूस पे पड़े येशु के उस चित्र को अपने मन में जीवित कर लें जो अनुकरण का सही उदाहरण है।

मैंने इस चिंतन की तैयारी उड़ीसा के एक ज़िले कान्धामल में की। यह वो जगह है जहाँ के लोगों ने प्रभु येशु में अपने विश्वास के लिए बहुत सहा। आगे बताए जाने वाली घटना ने मुझे अन्दर से छू लिया और जैसे जैसे मैंने उसे आगे सुना मैं पुरा हिल गया जो कान्धामल के एक गाँव में घटी, जहाँ कुछ कट्टरपंथी लोगों ने इसाईयों पर अगस्त 2008 में जानलेवा हमले किए। एक इसाई को कुछ हिन्दु धर्मान्तों ने घसीटकर एक मंदिर के आंगन में ले जाकर प्रभु येशु में अपने विश्वास को अस्वीकार करके ''जय राम'' बोलने को कहा गया। लेकिन उसने कहा जय येशु और उन लोगों ने उसका दाहिना हाथ काट दिया। उन लोगों ने फिर से उसे जय राम बोलने को कहा लेकिन वो जय येशु चिल्लाया और उन लोगों ने उसका बाँया हाथ भी काट डाला। और यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक की उन लोगों ने इसी प्रकार उसके दोनों पैर और सिर भी काट डाले। वह आदमी किस तरह इतना दर्द और तकलीफ सह सकता है और फिर भी अपने विश्वास का प्रचार करता रहा? इसमें कोई आशंका नहीं की उसे स्वर्ग से सहने की शक्ति मिली है।

पीड़ा की मुक्ति दिलाने की शक्ति

पीड़ा एक आम आदमी, संत यहाँ तक की एक पापी की ज़िन्दगी का किसी ना किसी रूप से एक ज़रूरी हिस्सा है। आम तौर पे हमारी आदत है कि हम हर करह की पीड़ा निकाल देना चाहते हैं। लेकिन उन पीड़ाओं की तरफ हमारा रवैया उन्हें हमारे लिए लाभदायक या नुकसादायक बना सकता और इसलिए हमें उन्हें सुसमाचार की रोशनी में प्रभु की दृष्टि से देखना चाहिए। यह इसलिए क्योंकि सहन हमें ईश्वर से दूर या ईश्वर के पास ला सकती है। यह हमें क्रोधी और दुखी बना सकते हैं यहाँ तक की भगवान को भी हम इस सहन के लिए दोष दे सकते हैं, या फिर ये हमें ईश्वरीय दृष्टि जो हर वक्त काम करती है उसके बारे में जागृत कर सकती है। यह हमें खुद पर दया करवा सकती है या फिर एक शिष्य और विमोचक के रूप में दुनिया में जाने में मदद भी कर सकती है।

लेकिन पीड़ा का खुद में कोई अर्थ नहीं है। नहीं तो कलिसीया इतने इन्सटिट्यूशन जैसे हस्पताल, आरोग्यशाला अन्यथा का निर्माण मानवीय पीड़ा को कम करने के लिए नहीं करती। चर्च अपने लिए कभी भी सहन को महिमा नहीं देता, लेकिन यह प्रभु को महिमा देता है जब हम इसे ईश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए प्यार से अपनाते हैं।

येशु का सहन 'विकल्पिक' है, हमारे बदले सहना, यह विमोचक है। इसलिए पोप जॉन पॉल द्वितीय कहते हैं कि येशु ने हमें सहने का मतलब बताया है ना केवल अपनी शिक्षा से बल्कि अपनी पीड़ा से भी। येशु की पीड़ा में सहन के बारे में कुछ नयी सोच जोड़ी गयी है, यह प्रेम से जोड़ा गया है। येशु के पीड़ा सहन के कारण, मानवीय पीड़ा सहन के लिए एक नयी स्थिती है, जिस तरह से जोब अपने पीड़ा सहन के वक्त बोल पाया था ''मैं जानता हूँ की मेरा रक्षक जीवित है'' (जोब 19:25)। संक्षेप में मसीह ने अपने विमोचकीय पीड़ा सहन के द्वारा, उनके आध्यात्मिक शरीर के सदस्यों याने कि कलीसिया द्वारा अनुभव किए गए पीड़ा सहन को अपनाकर उसे येशु मसीह के पीड़ा सहन के साथ अर्पन करने पर हमें एक विमोचकीय शक्ति दी। इसलिए हर एक व्यक्ति अपने पीड़ा सहन में मसीह के विमोचकीय पीड़ा सहन के सहभागी बन सकते हैं (पोप जॉन पॉल द्वितीय)।

हमारे प्रतिदिन का क्रूस

क्रूस ही वो साधन था जो प्रभु ने मानव जाती की माक्ष के लिए चुना। इसलिए येशु मसीह ज़िन्दगी की तकलीफों, मुसीबतों और जीवन की परीक्षाओं को वो क्रूस कहते हैं जिसे हमें आलिंगन करना चाहिए अगर हम उसके शिष्य बनना चाहते हैं (मत्ती 16:24)। इनको भी मसीह के पीड़ा सहन के साथ अपनाने से मसीह हमें विमोचकीय शक्ति, विमोचकीय मूल्य और अपने पीड़ा सहन के फल का एक हिस्सा, देंगे। ये प्रतिदिन 'क्रूस' और 'पीड़ा सहन' में अनंत सूची हो सकती है : शारीरिक पीड़ा, मानसिक वेदनाएँ, निराशापन, मायूसी, अपमान, देरी होना, बिमारियाँ, गरीबि, बिज़नेस में घाटा, अकेलापन, गलत समझा जाना, गलत आरोप लगना, तकलीफें, प्रतिदिन का थकान, अपने प्यारों की मौत का दुःख, प्रभु के आदेशों को पूरा करने के लिए मुश्किल त्याग और हमारे जीवन की स्थिती में हमारे कर्तव्य आदि।

बिना किसी शिकायत पूरे मन से इन प्रतिदिन क्रूसों और पीड़ा सहनों को जिसे प्रभु ने अपने ईश्वरीय दृष्टि और इच्छा से हमारे जीवन में आने दिया, अपनाने से, हम अपनी और दूसरों के पापों के ऋणों को चुका सकते हैं। क्योंकि प्रभु अपनी दया में अपने शरीर के एक आदमी को दसरे की कमी को पूरा करने की अनुमति देता है। संत पौलोस पीड़ा सहन के विमाचक शक्ति के नए विचारों से पूरित हो कहते हैं ''तुम्हारे लिए हर तरह की पीड़ा सहने में खुशी मिलती है। येशु के शरीर याने की कलीसिया के खातिर मैं अपने शरीर में वो भरता हूँ जो येशु के पीड़ा सहन में कमी है (कोल 1:24)''।

जीसस यूथ परिवार के सदस्य होने से हम अपने भाई बहनों के कई कमियों और कमज़ोरियों के बारे में जानते होंगें। इस जुबिली के साल में प्रत्येक रूप से जब हम पेन्टाकोस्ट रविवार के दिन अपने रीकमिटमेन्ट और रीयूनियन के लिए खुद को तैयार करते हुए इन दिनों में क्या हम यह प्रयत्न कर सकते हैं कि अपने पापों, गलतियों आदि के द्वारा हमारे ऊपर आए हमारे पापों के ऋण को हम चुका सकें? हाल ही में मेरी आँखें नम हो गई जब मैंने एक मेल को पढ़ा जो एक स्त्री द्वारा भेजे गई थी जिसका सर्जरी हुआ था और वो बहुत दर्द में थी। उसने लिखा था ''फादर, आपकी अगर कोई मंशा है जिसके लिए मैं अपनी इन पीड़ाओं को अर्पण कर सकूँ तो आप मुझे ज़रूर बताइए।'' लीसियक्स की संत टेरेसा मिश्नरियों के प्रति अपने प्रेम के लिए जानी जाती है। उसका प्रेम उसकी प्रक्रिया में बदल गई जब उसने अपना हर एक बलिदान, दर्द और पीड़ा सहन मिश्नरियों के लिए अपर्ण किया। आश्चर्य की बात नहीं है कि इसलिए कलिसिया ने उन्हें मिश्नरियों का सहायक घोषित किया है।

प्रक्रिया के लिए प्रार्थना

ये कृपा के दिन हमें चुनौती दें की हम ना केवल प्रार्थना करें बल्कि हम प्रक्रिया की ओर भी जाएँ। यह सच है कि मैं दुनिया में शांति के लिए बहुत अच्छे से प्रार्थना करूँ मगर खुद उन लोगों को माफ ना करूँ जिन्होंने मेरा दिल दुखाया। फिर प्रभु इस धरती पर शांति कैसे लाऐंगे? मैं अपने किसी दोस्त या किसी सहकर्मी को दुखी देखकर उनके लिए प्रार्थना तो करता हूँ मगर आगे बढ़कर उनसे बात ना करूँ तो वे प्रभु के प्रेम का एहसास कैसे करेंगे? मैं दुनियाभर के जीसस यूथ से सामाजिक नेटवर्क द्वारा संर्पक में हूँ मगर खुद के टीम के लोगों और अपने मिनिस्ट्री के लिए वक्त ही नहीं। मेरे परिवार, कार्यस्थल एवं कॉलेज के अलावा हर जगह मैं एक जाना माना जीसस यूथ का लीडर हूँ। जी हाँ इन सब के लिए हमें 'स्वर्ग से शक्ति' की ज़रूरत है हर एक परेशानी, दर्द, पीड़ा सहन, क्रूस को लेने के लिए, एक अलग सा कदम उठाने के लिए, प्रक्रिया की ओर जाने के लिए, शुद्धता से जीने के लिए, हमारी प्रार्थना का फल उत्पन्न होने के लिए।

रेव० फा० बिताजू मैथ्यू ओ. एस. टी.
बैंगलोर, इन्डिया